

ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.) में स्त्रियों की स्थिति अपेक्षाकृत स्वतंत्र, सम्मानजनक और समान थी, परंतु उत्तर वैदिक काल (1000–600 ई.पू.) से लेकर बाद के युगों में उनके अधिकारों और स्वतंत्रता में क्रमशः गिरावट आती गई। इसके मुख्य कारणों को निम्नलिखित बिंदुओं में समझा जा सकता है—

1. सामाजिक संरचना में परिवर्तन

ऋग्वैदिक काल में समाज जनजातीय और गतिशील था, जहाँ परिवार और समाज में स्त्रियाँ समान रूप से सहभागी थीं। परंतु उत्तर वैदिक काल में समाज स्थिर कृषि आधारित और पितृसत्तात्मक बनने लगा। भूमि, संपत्ति और उत्तराधिकार के प्रश्न महत्वपूर्ण हो गए, और इस कारण स्त्रियों को संपत्ति और अधिकार से दूर रखा गया।

2. धर्म और यज्ञकर्म की जटिलता

ऋग्वैदिक युग में स्त्रियाँ 'ऋषिकाएँ' के रूप में मंत्र रचती थीं — जैसे घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा, अपाला। परंतु उत्तर वैदिक युग में यज्ञकर्म अत्यंत जटिल और पुरुष-प्रधान हो गया। ब्राह्मणों का वर्चस्व बढ़ा और धार्मिक क्षेत्र में स्त्रियों की भागीदारी लगभग समाप्त कर दी गई।

3. पितृसत्ता का सुदृढ़ होना

वंश, संपत्ति और सामाजिक प्रतिष्ठा को पुरुष वंश से जोड़े जाने के कारण स्त्रियाँ पुरुष की अधीन मानी जाने लगीं। विवाह का उद्देश्य 'संतानोत्पत्ति' और 'वंशवृद्धि' बन गया, जिससे स्त्रियों की स्वतंत्र पहचान मिटने लगी।

4. उपनयन और शिक्षा के अधिकार का हास

ऋग्वैदिक काल में स्त्रियाँ शिक्षा प्राप्त करती थीं और ब्रह्मवादिनी (जीवनपर्यंत अध्ययनशील) तथा साध्यवाधू (गृहस्थ जीवन में अध्ययनशील) के रूप में जानी जाती थीं। परंतु उत्तर वैदिक काल से उनका उपनयन संस्कार समाप्त कर दिया गया, जिससे वे वैदिक अध्ययन से वंचित हो गईं।

5. विवाह की बदलती परंपराएँ

पूर्व में स्वयंवर जैसी स्वतंत्र संस्थाएँ थीं। बाद में बालविवाह, पितृनिर्णीत विवाह, और पत्नीत्व का नियंत्रण बढ़ गया। स्त्रियों के पुनर्विवाह और विधवा विवाह को अस्वीकार्य माना जाने लगा।

6. Manusmriti और धर्मशास्त्रीय संहिताओं का प्रभाव

मनुस्मृति जैसी ग्रंथों ने स्त्रियों की स्वतंत्रता पर कठोर नियंत्रण का विधान किया —

> “पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने, पुत्रो रक्षति वार्धक्ये।”
इससे स्त्री जीवन पुरुष-निर्भर बना दिया गया।

7. विदेशी आक्रमणों और अस्थिरता का प्रभाव

लगातार आक्रमणों (विशेषतः उत्तर भारत में) के दौर में सामाजिक-सांस्कृतिक असुरक्षा बढ़ी। स्त्रियों की रक्षा के नाम पर उन्हें और अधिक घर की चारदीवारी तक सीमित कर दिया गया।

8. आर्थिक कारण

पुरुषों द्वारा उत्पादन के प्रमुख साधनों (भूमि, पशु, व्यापार) पर नियंत्रण बढ़ने से स्त्रियाँ आर्थिक रूप से निर्भर हो गईं। आर्थिक निर्भरता ने सामाजिक निर्भरता को और सुदृढ़ किया।

9. शिक्षा और स्वावलंबन का हास

जैसे-जैसे शिक्षा का प्रसार केवल उच्चवर्गीय पुरुषों तक सीमित हुआ, स्त्रियाँ बौद्धिक रूप से उपेक्षित होती गईं। इससे उनका आत्मविश्वास और सामाजिक सम्मान दोनों घटे।

10. सांस्कृतिक आदर्शों में परिवर्तन

रामायण-महाभारत काल से स्त्री के आदर्श रूप में पतिव्रता, सहनशील और गृहलक्ष्मी का रूप प्रमुख हो गया, जबकि स्वतंत्र विचारशील नारी की अवधारणा कमजोर पड़ गई।

निष्कर्ष

ऋग्वैदिक काल की स्वतंत्र, विदुषी और सहभागी स्त्री धीरे-धीरे सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक कारणों से निर्भर, नियंत्रित और अधीनस्थ बन गई।

यह प्रक्रिया धीमी थी परंतु लम्बे समय में गहरी सामाजिक जड़ें जमा गईं, जिसे मध्यकाल तक पूरी तरह बदला नहीं जा सका।